44

राष्ट्रीय संत तुकडोजी महान समाजसुधारक

प्रा. हिरडे नारायण एन.
महाराजा जिवाजीराव शिंदे महाविद्यालय
श्रीगोंदा जि.अहमदनगर
मो.नं. ९७६३७३२७२९

संत तु डोजी ा जन्म ३० अप्रैल १९०९ में महाराष्ट्र े अमरावती जिले े यावली ाम में हुआ । पिता बंडोजी पंत ौर माता मंजुला देवी विठ्ठल भक्त थे। पिता पेशे से दर्जी ा ाम रते थे । तु डोजी ने ग्रामसुधार आध्यात्मि उन्नति ो अपना जीवन ल य बनाया । संत बीर जैसा ही इन्हें महान ्रांति ारी माना जाता है। भारतीय संत परंपरा में तु डोजी ा महत्व उल्ले नीय है। पढाई चौथी ा त ही हुई थी । ग्राम ीता इस ग्रंथ द्वारा उन्होंने उपासना ,आध्यात्मज्ञान ,सामाजि एवं राष्ट्रीय सुधार ा संदेश दिया है। तु डोजी ने स्वरचित भजन ीतों द्वारा समाज प्रबोधन ा महत्वपू ार्य ि या।

ग्रामसुधार, अंधश्रद्धा निर्मुलन, देश ल्या ा, नारीशि ा, भाईचारा, राष्ट्रीय ए ता , सर्व धर्म समभाव, व्यसन निर्मुलन ,राष्ट्रप्रेम, परिश्रम, व्यक्ति ी सुधार ा ,मानवता आदि ार्यो में तु डोजी ा यो दान उल्ले नीय है। ग्राम े युव ो ो व्यायाम ा महत्व बता र बलशाली बनने ी प्रेर ा दी। तु डोजी ी यह अभिलाषा थी ि सब ा भला हो । तु डोजी पहले प्रबोधन ार समाजसुधार है फिर साहित्य ार । ग्रामसुधार ,समाजप्रबोधन और राष्ट्रप्रेम ी भावना इन ी रचनाओं ा मु य स्वर रहा है। हिंदी मराठी में अभं ा ,भजन , ीतों ी रचना ी ।

संत तु डोजी ी प्रमु ा रचनाएँ - ग्राम ीता ,राष्ट्रीय भजनावली, अनुभव सा ार, सेवा स्वधर्म ,भजनावली आदि । भारत े राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद ने उन े भजनों ो सुन र उन ा संबोधन राष्ट्रसंत े रूप में ि या । १९३५ में उन्होंने अमरावती े पास मोझरी में गुरू ुंज आश्रम ी स्थापना ी । उन ा विचार था ि जबत ाँवों ा वि ास नहीं हो ा तब त राष्ट्र ा वि ास संभव नहीं क्योंि भारत ाँवों ा देश हैं। ग्राम ीता यह रचना विशेष रूप से चर्चित है । इन े विचार वा ी में श्रोताओं ो मंत्रमु ध रनें ी शक्ति थी । संत तु डोजी े विचार वा ी आज प्रासं ि है और ल भी प्रसं ि रहे ी । समाजजीवन ा हन अनुभव ,सु म निरी ा होने े ार ा समाज में व्याप्त अनाचार ,अन्याय ,अंधविश्वास ,रुढि परंपरा ,पिछडाप ा ,व्यसन ,जातिभेदभाव ,आपसी झ ाडें रीबी दूर रनें हेतु तु डोजीनें हाथ में ंजिरी ले र भजन ीत ायें। ाँव े युव ो में राष्ट्र चेतना देश प्रेम जा ृती ा ार्य ि या।

संत तु डोजी नें स्वतंत्रता प्राप्ति े बाद ग्राम सुधार ो ले र अने ीतों ी ,पदों ी रचना ी ,जिसमें समाजसुधार, राष्ट्रप्रेम दे ने लाय है। ाँवों े ि सान तथा सभी लो ों ो संबोधित र तु डोजी निम्न लि ित पद में समझाते है ि अपना भारत देश श्रेष्ठ या महासत्ता ब बने ा -

अब तो आया सवराज । अपना सुंदर ाँव बनालो ।
हि मानो यार ि सानों अपना सुंदर ाँव बनालो ।
पहला धर्म बढाओं ि सानी सुधरा अपनी घर जिंद ानी ।
ाम रो और मस्त रहो यह फैलाओं आवाज ।अपना सुंदर...
लि ना पढना सब ोई जानों । रहन सहन ऊँची पहचानों ।
रहे न अब बे ार ाँव में । हो ाई भी समाज ।अपना सुंदर..
निर्मल हो मार ा अति प्यारा ंदा हो न ोई द्वारा ।
जिधर उधर हो वृ ा फलों े । सब े सु ा े ताज ।अपना सुंदर..

चर ा घर - घर ूँज उडावें । ाँव हि में ादी ुनि जावें ।
दुध दही े ैया हो । और मती हो न अनाज ।अपना सुंदर..
व्यसन जरा ना हो बस्ती में । झ ाडा हो न ि सी` जी में।
तु ड्या दास हें तब हो ा भारत यह सिरताज ।अपना सुंदर..

आज हम दे तें है ि राष्ट्र समाज ाँवों े ले र ि सानों े युव ें े न जानें ि तनी समस्याएँ हमारें सामने है जिन ा समाधान हम तु डोजी ` उपर्युक्त पद में ढूँढ स तें है। हम ुद अपनी परिस्थिति ` जिम्मेदार है । वर्तमान परिवेश यदि हम दे ें े तो सभी ओर अन्याय ,झ ाडे ,बेरोज ारी ,व्यसनाधीन समाज ,हिंसा ,स्वार्थ ,अमानवता, ारीबी ,भ्रष्ट आचर ा ,अनैति ता ,जातिभेदभाव मार ाट, अंधविश्वास ा साम्राज्य दि ाता है। ऐसे में हमारा भारत महासत्ता ै से बने ा ? आज मानवता ,भाईचारा, धर्म ,प्रेम ,ए ता ,राष्ट्रप्रेम ,जीवनमूल्य ,नैति ता ,आचर ा ,व्यवहार और विचारों में ि रावट आयी है । मानवता धो े में है। ाँव ` युव ें े सचेत हो र विचार मंच बना र तथा संतों ` विचारों े ्रह ा र सोच विचार रें े तो अपना और ाँवो ा सुधार, वि ास संभव है। आज युव ें े ाफी सं या है जो बेरोज ार है । वे ` वल फॉलोअर्स बने हुये है जिससे दिशाहीन, व्यसनाधिन और पथभ्रष्ट्र हो रहे है।

अपने वि ास ` लिए हमे संत तु डोजी तथा अन्य संतों ` महान विचारों ा आश्रय लेना पडें ा और स्वार्थ, भ्रष्ट आचर ा ा त्या ा र मानव मानवता ,पर्यावर ा े भलाई में जूट जाना हो ा। हमारे साहित्य ार ,सुधार समी ा ,पत्र ार, युव , महिला ,अध्याप ,ि सान, मजदूर सभी घिनौंनी राजनीति से दूर रह र सोच समझ र समाज व मानव ा भलाई ` लिए प्रयास रें। आ ो आए और अमल रें यह समय े माँ ा है । हम हमारे ही श्रेष्ठ विचारों े ,हम अपनी संस्ृ ति सभ्यता े ,महान साहित्य े भूल ाये है। भारत ने ही ये विचार दिये है - वसुधैव ुटूंम्ब म, सत्यमेव जयते ,सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा ,प्रा ा जायें पर वचन न जायें।

ाम ीता में तु डोजी नौजवानों से हतें है -
हम भारत े शान है वीरों े संतान है ।
बढो जवानों लडो शत्रु से चाहे हो बलिदान है ।

इसी तरह राष्ट्रीय भजनाली में तु डोजी राष्ट्र ` लियें अपनी जान मान सब ुछ अर्प ा रने े बात रते है ।

हता तु डया दास राष्ट्र े जान मान अर्प ा र दो,
बुरा न ि सि ा चाहो म ार अन्यायी े बाजू र दो ।
भारत ` बाल सारे ही आजादी े सेना,
उँचा हो चारित्र्य सभी ा तु डया ा है हना ।

इस प्र ार भारत े अ ंडता ` लिए हमारा चारित्र्य श्रेष्ठ हो ,सत्य मा ा हो ,आचर ा श्रेष्ठ हो ,व्रतस्थ जीवन हो । सच्चा प्रेम हो तथा देश ` लिए त्या ा समर्प ा हो । सच्चा प्रेम मानवता ही धर्म है ।

तु डोजी ` साहित्य ा ,विचारों ा हम ाहन अध्ययन रें े तो मनुष्य ुद ा सुधार, समाज व राष्ट्र ा भला र स ता है । निश्चय ` साथ हना पडता है ि तु डोजी े वा ी आज भी प्रासं ि है और शायद ल भी प्रासं ि हो ी। नि:संदेह हमारी सारी समस्याओं ा समाधान संत तु डोजी े वा ी में मिले ा । ऐसे महान संत ा निधन १९६९ में हुआ ।

संदर्भ -

१) ाम ीता - संत तु डोजी
२) राष्ट्रीय भजनावली - संत तु डोजी
३) युव भारती (बारहवी ा) - संपाद डॉ. सुनील चव्हा ा
डॉ. मेदिनी अंजनी र